

KASHYAP'S DENTAL CLINIC

Dr. Vaibhav Kashyap



Oral & Dental Surgeon, C.c. Endodontist & Implantologist Certified Orthodontist, MIDA

"Smiles & More"

छात्र-छात्राओं के लिए
50% की छूट



- ❖ आरसीटी
- ❖ पायरिया का ईलाज
- ❖ टेफे-मेफे दाँतों का ईलाज
- ❖ स्मार्टल डिजाइन
- ❖ इनविजिवल विलाप
- ❖ दंत रोपण
- ❖ फिक्स दाँत लगाना
- ❖ अत्यधुनिक मशीन और तकनीक के द्वारा ईलाज

CHAMBER

SKYLINE - 4006, 4th Floor, Kadru, Opp. Dr. Lal's Hospital, Ranchi
Contact No. : 9199533383, 7903835453
Time : 9 am to 2 pm & 4 pm to 8 pm
Sunday : 9 am to 2 pm
E-mail : vaibhav.kashyap2011@gmail.com

अमित शाह ने विधायी प्रारूपण पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन, बोले

कठिन शब्दों में बना ड्राप्ट कानून विवाद खड़ा करता है

एजेंसी। नई दिल्ली केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने कहा कि कठिन शब्दों में ड्राप्ट किया हुआ कानून हमेशा विवाद खड़ा करता है। कानून विवाद सरल और स्पष्ट शब्दों में लिखा होता है, उतना ही अविवादित होता है।

केंद्रीय गृह मंत्री शाह ने सोमवार को संसद भवन परिसर में विधायी प्रारूपण पर आयोजित एक प्रशिक्षण कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि अदालत को हस्तक्षेप करने का भौका न मिले, ऐसा कानून बनाना अच्छे कानून के बाहर का भाँड़ल है। उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य सरल और स्पष्ट भाषा में कानून को ड्राप्ट करने का होना चाहिए। शाह ने सोमवार को संसद, राज्य विधानसभाओं, विभिन्न मंत्रालयों और वैधानिक निकायों के केंद्र और राज्यों के अधिकारियों के लिए आयोजित लैजिस्लेटिव ड्राप्टिंग सम्बन्धी ट्रेनिंग प्रोग्राम को संबोधित करते हुए कहा कि लैजिस्लेटिव ड्राप्टिंग बहुत महत्वपूर्ण है। शाह ने अगे हमारे लोकतंत्र का बहुत महत्वपूर्ण अंग है। इसके बारे में जनकारी का अप्याव न केवल कानूनों और पूरी लोकतांत्रिक व्यवस्था को निवाल करता है, बल्कि न्याय प्रणाली के कार्यों को भी प्रभावित करता है।

उन्होंने अगे कहा कि लैजिस्लेटिव ड्राप्टिंग किसी भी लोकतांत्रिक देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए इसके स्किल में समानुसार बदलाव,



बढ़ोत्तरी और अधिक दक्षता होती रहनी चाहिए। शाह ने कहा कि संसद और केंद्रीय मंत्रिमंडल की राजनीतिक इच्छा को कानून के साथ में ढालने का काम लैजिस्लेटिव डिपार्टमेंट का होता है। उन्होंने कहा कि पार्लियाल किया गया का सम्बोधित करने के समाधान के रास्तों और देश की अलग-अलग जरूरतों को कानून स्वरूप देने का काम लैजिस्लेटिव विभाग का है और इसलिए ड्राप्टिंग बहुत महत्वपूर्ण है। शाह ने अगे गमरे लोकतंत्र का बहुत महत्वपूर्ण अंग है। इसके बारे में जनकारी का अप्याव न केवल कानूनों और पूरी लोकतांत्रिक व्यवस्था को निवाल करता है, बल्कि न्याय प्रणाली के कार्यों को भी प्रभावित करता है।

उन्होंने अगे कहा कि लैजिस्लेटिव ड्राप्टिंग किसी भी लोकतांत्रिक देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए इसके

स्किल में समानुसार बदलाव,

केंद्रीय गृह मंत्री ने जिन नियमों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कहा कि लैजिस्लेटिव ड्राप्टिंग में ग्रे एरिया छोड़ने से व्याख्या करते समय इसमें एन्क्रोचमेंट की संभावना होती है और अगर ड्राप्टिंग परिपूर्ण व स्पष्ट हो तो इसकी व्याख्या भी स्पष्ट हो जाएगी। उन्होंने कहा कि ड्राप्टिंग में ग्रे एरिया छोड़ने से व्याख्या करते समय इसमें एन्क्रोचमेंट की संभावना होती है और अगर ड्राप्टिंग परिपूर्ण व स्पष्ट हो तो इसकी व्याख्या भी स्पष्ट हो जाएगी।

बदल रही है और हमें बदलती हुई दुनिया के साथ कदम उठाने होंगे। कानूनों को आज की जरूरतों के हिसाब से नए सांचे भी ढालना होगा। अगर हम इतना खुलासा नहीं रखते हैं तो हम कालवाहा और अप्रासंगिक हो जाएंगे।

बदल रही है और हमें बदलती हुई दुनिया के साथ कदम उठाने होंगे। कानूनों को आज की जरूरतों के हिसाब से नए सांचे भी ढालना होगा। अगर हम इतना खुलासा नहीं रखते हैं तो हम कालवाहा और अप्रासंगिक हो जाएंगे।

बदल रही है और हमें बदलती हुई दुनिया के साथ कदम उठाने होंगे। कानूनों को आज की जरूरतों के हिसाब से नए सांचे भी ढालना होगा। अगर हम इतना खुलासा नहीं रखते हैं तो हम कालवाहा और अप्रासंगिक हो जाएंगे।

बदल रही है और हमें बदलती हुई दुनिया के साथ कदम उठाने होंगे। कानूनों को आज की जरूरतों के हिसाब से नए सांचे भी ढालना होगा। अगर हम इतना खुलासा नहीं रखते हैं तो हम कालवाहा और अप्रासंगिक हो जाएंगे।

बदल रही है और हमें बदलती हुई दुनिया के साथ कदम उठाने होंगे। कानूनों को आज की जरूरतों के हिसाब से नए सांचे भी ढालना होगा। अगर हम इतना खुलासा नहीं रखते हैं तो हम कालवाहा और अप्रासंगिक हो जाएंगे।

बदल रही है और हमें बदलती हुई दुनिया के साथ कदम उठाने होंगे। कानूनों को आज की जरूरतों के हिसाब से नए सांचे भी ढालना होगा। अगर हम इतना खुलासा नहीं रखते हैं तो हम कालवाहा और अप्रासंगिक हो जाएंगे।

बदल रही है और हमें बदलती हुई दुनिया के साथ कदम उठाने होंगे। कानूनों को आज की जरूरतों के हिसाब से नए सांचे भी ढालना होगा। अगर हम इतना खुलासा नहीं रखते हैं तो हम कालवाहा और अप्रासंगिक हो जाएंगे।

बदल रही है और हमें बदलती हुई दुनिया के साथ कदम उठाने होंगे। कानूनों को आज की जरूरतों के हिसाब से नए सांचे भी ढालना होगा। अगर हम इतना खुलासा नहीं रखते हैं तो हम कालवाहा और अप्रासंगिक हो जाएंगे।

बदल रही है और हमें बदलती हुई दुनिया के साथ कदम उठाने होंगे। कानूनों को आज की जरूरतों के हिसाब से नए सांचे भी ढालना होगा। अगर हम इतना खुलासा नहीं रखते हैं तो हम कालवाहा और अप्रासंगिक हो जाएंगे।

बदल रही है और हमें बदलती हुई दुनिया के साथ कदम उठाने होंगे। कानूनों को आज की जरूरतों के हिसाब से नए सांचे भी ढालना होगा। अगर हम इतना खुलासा नहीं रखते हैं तो हम कालवाहा और अप्रासंगिक हो जाएंगे।

बदल रही है और हमें बदलती हुई दुनिया के साथ कदम उठाने होंगे। कानूनों को आज की जरूरतों के हिसाब से नए सांचे भी ढालना होगा। अगर हम इतना खुलासा नहीं रखते हैं तो हम कालवाहा और अप्रासंगिक हो जाएंगे।

बदल रही है और हमें बदलती हुई दुनिया के साथ कदम उठाने होंगे। कानूनों को आज की जरूरतों के हिसाब से नए सांचे भी ढालना होगा। अगर हम इतना खुलासा नहीं रखते हैं तो हम कालवाहा और अप्रासंगिक हो जाएंगे।

बदल रही है और हमें बदलती हुई दुनिया के साथ कदम उठाने होंगे। कानूनों को आज की जरूरतों के हिसाब से नए सांचे भी ढालना होगा। अगर हम इतना खुलासा नहीं रखते हैं तो हम कालवाहा और अप्रासंगिक हो जाएंगे।

बदल रही है और हमें बदलती हुई दुनिया के साथ कदम उठाने होंगे। कानूनों को आज की जरूरतों के हिसाब से नए सांचे भी ढालना होगा। अगर हम इतना खुलासा नहीं रखते हैं तो हम कालवाहा और अप्रासंगिक हो जाएंगे।

बदल रही है और हमें बदलती हुई दुनिया के साथ कदम उठाने होंगे। कानूनों को आज की जरूरतों के हिसाब से नए सांचे भी ढालना होगा। अगर हम इतना खुलासा नहीं रखते हैं तो हम कालवाहा और अप्रासंगिक हो जाएंगे।

बदल रही है और हमें बदलती हुई दुनिया के साथ कदम उठाने होंगे। कानूनों को आज की जरूरतों के हिसाब से नए सांचे भी ढालना होगा। अगर हम इतना खुलासा नहीं रखते हैं तो हम कालवाहा और अप्रासंगिक हो जाएंगे।

बदल रही है और हमें बदलती हुई दुनिया के साथ कदम उठाने होंगे। कानूनों को आज की जरूरतों के हिसाब से नए सांचे भी ढालना होगा। अगर हम इतना खुलासा नहीं रखते हैं तो हम कालवाहा और अप्रासंगिक हो जाएंगे।

बदल रही है और हमें बदलती हुई दुनिया के साथ कदम उठाने होंगे। कानूनों को आज की जरूरतों के हिसाब से नए सांचे भी ढालना होगा। अगर हम इतना खुलासा नहीं रखते हैं तो हम कालवाहा और अप्रासंगिक हो जाएंगे।

बदल रही है और हमें बदलती हुई दुनिया के साथ कदम उठाने होंगे। कानूनों को आज की जरूरतों के हिसाब से नए सांचे भी ढालना होगा। अगर हम इतना खुलासा नहीं रखते हैं तो हम कालवाहा और अप्रासंगिक हो जाएंगे।

बदल रही है और हमें बदलती हुई दुनिया के साथ कदम उठाने होंगे। कानूनों को आज की जरूरतों के हिसाब से नए सांचे भी ढालना होगा। अगर हम इतना खुलासा नहीं रखते हैं तो हम कालवाहा और अप्रासंगिक हो जाएंगे।

बदल रही है और हमें बदलती हुई